विषय-सूची

पृष्ठ सं॰

प्राक्कथन

1 प्रथम अध्याय : कवि व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1-28

1.1 भूमिका

1.2 तुलसीदास

1.2.1 जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.2.2 जन्म परिचय

1.2.3 जन्म-स्थान

1.2.4 कुल-परिवार एंव नाम

1.2.5 रचनाएँ एवं उपलब्धियाँ

1.3 माधव कंदली

1.3.1 जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व

1.3.2 माधव कंदली विरचित रचनाएँ

1.4 श्रीमंत शंकरदेव

1.4.1 जीवन, व्यक्तित्व एंव कृतित्व

1.4.2 कुल एंव वंश परम्परा

1.4.3 जन्म, माता-पिता एंव शिक्षा-दीक्षा

1.4.4 शंकरदेव कृत रचनाएँ तथा भक्ति प्रचार

1.5 श्री श्री माधवदेव

1.5.1 वंश-परंपरा

1.5.2 जन्म एवं शिक्षा-दीक्षा

1.5.3 रचनाएँ

1.6 निष्कर्ष

2 द्वितीय अध्याय : रामभक्ति काव्य परंपरा 29-43

2.1 प्रस्तावना

2.2 रामभक्ति काव्य परंपरा

2.2.1 राम कथा का आधार ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण'

2.2.2 भारतीय पुराणों तथा उपनिषदों में रामकथा

2.2.3 विविध महाकाव्यों में रामकथा

2.2.3.1 कालिदास कृत 'रघुवंशम्'

2.2.3.2 बौद्ध तथा जैन साहित्य में रामकथा

2.2.3.3 अन्य भारतीय भाषा-साहित्य में रामकथा

2.3 हिंदी राम काव्य परंपरा

2.3.1 तुलसी पूर्व हिंदी रामकाव्य परंपरा

2.3.1.1 स्वामी रामानंद

2.3.1.2 अग्रदास

2.3.1.3 ईश्वरदास

2.3.2 तुलसीकालीन हिंदी रामकाव्य परंपरा

2.3.2.1 तुलसीदास

2.3.2.2 नाभादास

2.3.3 तुलसीदासोत्तर हिंदी रामकाव्य परंपरा

2.4 असमीया रामकाव्य परंपरा

2.4.1 माधव कंदली कृत 'असमीया रामायण'

2.4.2 माधवदेव कृत असमीया रामायण का आदिकांड

2.4.3 श्रीमंत शंकरदेव विरचित 'उत्तरकांड'

2.4.4 भकतीया रामायण

2.4.5 दुर्गावरी रामायण

2.4.6 रामायण कथा

2.4.7 कोचराजसभा में रामकथा का अनुवाद

2.4.8 असमीया काव्य और नाटक

2.5 निष्कर्ष

3 तृतीय अध्याय : 'रामचरितमानस' में रामभक्ति का स्वरूप 44-117

3.1 प्रस्तावना

3.2 'भक्ति' शब्द की व्याख्या

3.3 भक्ति की आवश्यकता तथा उसके आलंबन

3.4 भक्ति के साधन या विधियाँ

3.5 प्रामाणिक वैष्णव भक्ति संप्रदाय

3.5.1 ब्रह्म संप्रदाय

3.5.2 श्री संप्रदाय

3.5.3 निंबार्क-संप्रदाय अथवा कुमार-संप्रदाय

3.5.4 रूद्र संप्रदाय

3.6 ‘रामचरितमानस’ में रामभक्ति

3.7 युगधर्म और रामभक्ति

3.8 ‘रामचरितमानस’ में रामभक्ति और उसकी विषद विवेचना

3.8.1 श्रवण

3.8.2 कीर्तन

3.8.3 स्मरण

3.8.4 पाद-सेवन

3.8.5 अर्चन

3.8.6 वंदन

3.8.7 दास्य

3.8.8 सख्य

3.8.9 आत्म निवेदन

3.9 निष्कर्ष

4. चतुर्थ अध्याय : 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति का स्वरूप 118-205

4 .1 प्रस्तावना

4.2 'सप्तकांड रामायण' में रामभक्ति की विषद विवेचना

4.3 भक्ति के साधन या विधियां

4.3.1 श्रवण

4.3.2 कीर्तन

4.3.3 स्मरण

4.3.4 पादसेवन

4.3.5 अर्चन

4.3.6 वंदन

4.3.7 दास्य

4.3.8 सख्य

4.3.9 आत्म निवेदन

4.4 निष्कर्ष

5 पंचम अध्याय : 'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता 206-249

5.1 प्रस्तावना

5.2 प्रासंगिकता शब्द की व्याख्या

5.3 'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता की विषद विवेचना

5.3.1 नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों की प्रासंगिकता

5.3.2 गुरु के प्रति समपर्ण तथा सेवा भाव

5.3.3 संतो के गुण तथा सत्संग की माहिमा

5.3.4 स्त्री धर्म की शिक्षा

5.3.5 आदर्श गृहस्थ धर्म

5.3.6 शिष्टाचारों का नियमानुसार पालन

5.3.7 जातकर्म आदि सभी संस्कारों का पालन

5.3.8 अस्पृश्यता निवारण

5.3.9 मित्र धर्म का निर्वाह

5.3.10 भ्रातृ धर्म का पालन

5.3.11 जीवनोपयोगी नीतियाँ तथा उनकी प्रासंगिकता

5.4 रामभक्ति की प्रासंगिकता

5.5 निष्कर्ष

6. षष्ठ अध्याय : 'सप्तकाण्ड रामायण' की प्रासंगिकता 250-297

6.1 प्रस्तावना

6.2 'सप्तकाण्ड रामायण' की प्रासंगिकता की विषद विवेचना

6.2.1 कुशल राजधर्म की शिक्षा

6.2.2 वैदिक संस्कारों का पालन

6.2.3 स्वयंवर प्रथा

6.2.4 कर्मफल का परिणाम

6.2.5 माता–पिता की सेवा

6.2.6 दान प्रथा

6.2.7 स्त्री-धर्म की शिक्षा

6.2.8 भ्रातृ-प्रेम का आदर्श रूप

6.2.9 जातिगत भेदभाव से अलग मानवतावादी विचारधारा

6.2.10 सत्य-धर्म का पालन

6.2.11 गुरु के प्रति सेवा की भावना

6.2.12 कामुक स्वभाव का विनाश

6.2.13 मित्र-धर्म का निर्वाह

6.2.14 सत्संगति की प्रेरणा

6.2.15 जीवनोपयोगी नीतियाँ तथा आदर्श जीवन शैली

6.3 रामभक्ति की प्रासंगिकता

6.4 निष्कर्ष

7. सप्तम अध्याय : 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित रामभक्ति की तुलना 298-316

7.1 प्रस्तावना

7.2 साम्य

7.2.1 राम-भक्ति की आधारशिला 'नवधा-भक्ति' में समानता

7.3 वैषम्य

7.4 निष्कर्ष

8 अष्टम अध्याय : 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों की प्रासंगिकता की तुलना 317-329

8.1 प्रस्तावना

8.2 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों की प्रासंगिकता की तुलना

8.3 साम्य

8.4 वैषम्य

8.5 निष्कर्ष

9 नौवा अध्याय : उपसंहार 330-333

ग्रंथ सूची 334-339

अ) आधार ग्रंथ-सूची

आ) सहायक ग्रंथ-सूची